Dated: 19/8/2020

B.A Part-2 Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

पूर्णतावाद सुखवाद तथा कठोरतावाद के बीच किस प्रकार समन्वय करता है?

Ans:→ आचार दर्शन हमें उचित आचरण और अनुचित आचरण में भेद बताता है। लेकिन उचित और अनुचित आचरण के भेद को समझने के लिए मापदण्ड की आवश्यकता होती है। मापदंड के संबंध में विभिन्न आचारशास्त्रीयों का भिन्न-भिन्न मत है। बाह्य नियमवादियों ने बाह्य नियमों को चरम आदर्श माना है। सुखवादियों ने व्यक्ति की भावना की प्रधानता देते हुए सुख की प्राप्ति को ही चरम लक्ष्य माना है। बुद्धिवादियों ने व्यक्ति के विवेक (Reason) पर विशेष ध्यान देते हुए बुद्धि के आदेशों को ही चरम लक्ष्य माना है। सुखवाद के अनुसार भावना ही सब कुछ है और बुद्धिवाद के अनुसार बुद्धि ही सब कुछ है। इस तरह दोनों मत एकांगी है। इसलिए वे अपूर्ण है। नैतिकता का वास्तविक मापदंड पूर्णता प्राप्ति है। इस पूर्णता की प्राप्ति भावनाओं तथा विवेक में उचित समन्वय से होता है। इस प्रकार पूर्णता का अर्थ हुआ भावना को विवेक द्वारा नियंत्रित करना। प्रत्येक मनुष्य में दो प्रकार के तत्व पाये जाते हैं- रागात्मक और विवेकात्मक। पूर्णतावाद में रागात्मक और विवेकात्मक दोनों प्रकार के तत्वों को स्वीकार किया गया है। पूर्णतावाद के अनुसार नैतिकता का आदर्श न केवल भावना रूप में है और न भावनाओं के दमन में बल्कि नैतिकता का आदर्श दोनों के उचित समन्वय में है।